❍ 07 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗एक दो को सावधान किया ?∗

➢➢ ∗सर्विस का शौंक रखा ?∗

➢➢ ∗संकल्प से भी मेरेपन की मेल को समाप्त किया ?∗

➢➢ ∗हर परिस्थिति में फुल पास हुए ?∗

────────────────────────

✧˚ ° •●☆●•✧˚ ° •●☆●•✧˚ ° •●☆●•✧˚ °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ° •●☆●•✧˚ ° •●☆●•✧˚ ° •●☆●•✧˚ °

〰✧ ∗जैसे कोई भी व्यक्ति दर्पण के सामने खड़ा होते ही स्वयं का साक्षात्कार कर लेता है, वैसे आपकी आत्मिक स्थिति, शक्ति रुपी दर्पण के आगे कोई भी आत्मा आवे तो वह एक सेकेण्ड में स्व स्वरुप का दर्शन वा साक्षात्कार कर ले।∗ आपके हर कर्म में, हर चलन में रुहानियत की अट्रेक्शन हो। ∗जो स्वच्छ, आत्मिक बल वाली आत्मायें हैं वह सबको अपनी ओर आकर्षित जरूर करती हैं।∗

✧˚ ° •●☆●•✧˚ ° •●☆●•✧˚ ° •●☆●•✧˚ °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा हूँ"*

〰✧ बाप-दादा बच्चों को पहला-पहला टाइटिल देते हैं 'स्वदर्शन चक्रधारी'। बाप-दादा द्वारा मिला हुआ टाइटिल स्मृति में रहता है? *जितना-जितना स्वदर्शन चक्रधारी बनेंगे उतना मायाजीत बनेंगे।* तो स्वदर्शन चक्र चलाते रहते हो? स्वदर्शन चक्र चलाते-चलाते कब स्व के बजाय पर-दर्शन चक्र तो नहीं चल जाता?

〰✧ स्वदर्शन चक्रधारी बनने वाले स्व-राज्य और विश्व राज्य के अधिकारी बन जाते हैं। स्वराज्य अधिकारी अभी बने हो? *जो अभी स्वराज्य अधिकारी बनते वही भविष्य राज्य अधिकारी बन सकते हैं।* राज्य अधिकारी बनने के लिए कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए।

〰✧ *जब जिस कर्म इन्द्रिय द्वारा जो कर्म कराने चाहें वह करा सकते, इसको कहा जाता है 'अधिकारी'।* ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर है? कभी आंखे वह मुख धोखा तो नहीं देते। जब कन्ट्रोलिंग पावर होती है तो कोई भी कर्मेन्द्रिय कभी संकल्प रूप में भी धोखा नहीं दे सकती।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
✪ *रूहानी ड्रिल प्रति* ✪
☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *यह कर्मेन्द्रियाँ हमारी साथी हैं, कर्म की साथी हैं लेकिन मैं न्यारा और प्यारा हूँ अभी एक सेकण्ड में अभ्यास दोहराओ।* (बापदादा ने ड्रिल कराई) सहज लगता है कि मुश्किल है? सहज है तो सारे दिन में कर्म के समय यह स्मृति इमर्ज करो, तो कर्मातीत स्थिति का अनुभव सहज करेंगे।

〰✧ क्योंकि सेवा वा कर्म को छोड सकते हो? छोडेगे क्या? करना ही है। तपस्या में बैठना यह भी तो कर्म है तो बिना कर्म के वा बिना सेवा के तो रह नहीं सकते हो और रहना भी नहीं है। क्योंकि *समय कम है और सेवा अभी भी बहुत है।* सेवा की रूपरेखा बदली है।

〰✧ लेकिन अभी भी कई आत्माओं का उल्हना रहा हुआ है। इसलिए *सेवा और स्व-पुरुषार्थ दोनों का बैलेन्स रखो।* ऐसे नहीं कि सेवा में बहुत बिजी थे ना इसलिए स्व-पुरुषार्थ कम हो गया। नहीं। और ही सेवा में स्व-पुरुषार्थ का अटेन्शन ज्यादा चाहिए। क्योंकि *माया को आने की मार्जिन सेवा में बहुत प्रकार से होती है।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

•°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

•°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

•°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

~~✧ आजकल की दुनिया में ड्रामा के अतिरिक्त और कौन-सी वस्तु है जो ऐसे फ़रिश्तों के नयनों जैसी आकर्षण करने वाली हैं? टी.वी.। *जैसे टी.वी. द्वारा इस संसार की कैसी-कैसी सीन-सीनरियाँ देखते हुए कई आकर्षित होते अर्थात् गिरती कला में जाते हैं ऐसे ही फ़रिश्तों के नयन दिव्य दूर-दर्शन का काम करेंगे। हर एक के नयनों द्वारा सिर्फ इस संसार के ही नहीं लेकिन तीनों लोकों के दर्शन करेंगे। ऐसे फ़रिश्तों के मस्तक में चमकती हुई मणि, आत्माओं को सर्च-लाइट व लाइट हाउस के समान स्वयं का स्वरूप, स्वमार्ग और श्रेष्ठ मंज़िल का स्पष्ट साक्षात्कार करायेंगी। ऐसे फ़रिश्तों के युक्तियुक्त बोल अर्थात् अमूल्य बोल, हर भिखारी आत्मा की रत्नों से झोली भरपूर करेंगे।* जो गायन है देवतायें भी भक्तों पर प्रसन्न हो फूलों की वर्षा करते हैं- ऐसे आप श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा विश्व की आत्माओं के प्रति सर्व शक्तियों, सर्व गुणों तथा सर्व वरदानों की पुष्प-वर्षा सर्व के प्रति होगी।

•°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

•°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पतितों को पावन बनाने की सर्विस करना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बादलों के विमान में बैठ बापदादा के साथ पूरे ब्रह्मांड का चक्कर लगा रही हूँ... बाबा के साथ सूरज, चाँद, सितारों, आसमान की सैर करते हुए आनंद की लहरों में डोल रही हूँ...* परमधाम, सूक्ष्मवतन से होते हुए हम विश्व के गोले के ऊपर बैठ जाते हैं... बापदादा सारे विश्व की प्यासी, दुखी आत्माओं, तमोप्रधान प्रकृति को दिखाकर मुझे विश्व सेवा करने की शिक्षाएं देते हैं...

❊ *प्यारे बाबा सबका कल्याण कर अन्धो की लाठी बनने के लिए प्रेरित करते हुए कहते है:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वर पिता की तरहा विश्व कल्याण की भावना से भर जाओ... जो मीठे सुख जो खुशियां आपके जीवन में महकी है उन्हें सबके दिल आँगन में खिला आओ... *सारा विश्व सच्ची खुशियो में खिलखिलाये और हर मन मीठा मुस्कराये ऐसी रूहानी सेवा करते रहो..."*

➳ _ ➳ *ज्ञान के प्रकाश को स्वयं में भरकर चारों ओर ज्ञान की रोशनी फैलाते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... *मै आत्मा आप समान सबको सुखी और ईश्वरीय वर्से का अधिकारी बना रही हूँ...* सबको सच्चे सुख का रास्ता दिखाने वाली मा सुखदाता हो गई हूँ... ज्ञान के प्रकाश से हर दिल की राहे रौशन कर रही हूँ..."

❊ *पतित पावन मीठे बाबा पवित्रता की किरणों से मुझे चमकाते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *दिन रात सदा सबके कल्याण के ख्यालातों में मगन रहो... स्वयं भी व्यर्थ से मुक्त रहेंगे और सबके जीवन को सुनहरे सुखो से सजाने वाले...* विश्व कल्याणकारी बन मीठे बापदादा के दिल तख्त पर इठलायेंगे... और खुबसूरत भाग्य के धनी बन जायेंगे..."

➳ _ ➳ *दिन रात अपनी बुद्धि में सर्विस के खयालातों को भरकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा आपसे पायी खुशियो की दौलत को हर दिल पर लुटा रही हूँ... सच्चे ज्ञान की झनकार से हर दिल में सुख की बहार सजा रही हूँ... *सबका जीवन खुशियो से खिल रहा है और पूरा विश्व मीठा मुस्करा रहा है..."*

❉ *विश्व कल्याण का झंडा मेरे हाथों में सौंपते हुए मेरे बाबा कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... ईश्वर पिता के सहयोगी बनने वाले और सबके जीवन को नूरानी बनाने वाले महा भाग्यशाली हो... सच्चे सहारे होकर, सबको इन मीठी खुशियो का पैगाम देते जाओ... *ज्ञान के तीसरे नेत्र से सबकी जिंदगी में उजाला कर सुखो का पता दे आओ..."*

➳ _ ➳ *मैं विश्व कल्याणी फरिश्ता पूरे विश्व और प्रकृति को सर्व गुणों और शक्तियों की साकाश देते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... *मैं आत्मा ईश्वरीय सेवा धारी बनकर अपने महान भाग्य पर मुस्करा उठी हूँ...* कभी अपने ही गमो में रोने वाली, आज धरा से दुःख के आँसू का सफाया कर रही हूँ... चारो ओर खुशहाली और आनन्द के फूल खिलाने वाली खुबसूरत माली हो गई हूँ..."

———————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूहानी यात्रा पर रहने के लिये एक दो को सावधान करते रहना है*"

➳ _ ➳ स्वयं परम पिता परमात्मा शिव बाबा ने रूहानी पण्डा बन जो रूहानी यात्रा हम बच्चों को सिखलाई है, उस यात्रा पर रहने के लिए एक दो को सावधानी देते आगे बढ़ना और बढ़ाना ही हम ब्राह्मण बच्चों का कर्तव्य है। *अपने आश्रम में. बाबा के कमरे में बैठी मैं मन ही मन यह विचार करते हुए

बाबा का आह्वान करती हूँ और बाबा के साथ कम्बाइंड हो कर वहाँ उपस्थित अपने सभी ब्राह्मण भाईयों और बहनों को मनसा सकाश देते हुए ये संकल्प करती हूँ कि यहाँ उपस्थित मेरे सभी ब्राह्मण भाई बहन एक दो को सहयोग देते, इस रूहानी यात्रा पर निरन्तर आगे बढ़ते रहें* और ऐसे ही आगे बढ़ते और दूसरों को बढ़ाते जल्दी ही सारे विश्व की सभी ब्राह्मण आत्मायें संगठित रूप से एकमत होकर बाबा को प्रत्यक्ष करने का कार्य सम्पन्न करें।

➳ _ ➳ इसी संकल्प के साथ, स्वयं को अपने प्यारे बाबा की छत्रछाया के नीचे अनुभव करते, *अपने ब्राह्मण सो फरिश्ता स्वरुप में स्थित हो कर, मैं फरिश्ता अब बापदादा के साथ कम्बाइंड होकर ऊपर की ओर उड़ते हुए मधुबन की पावन धरनी पर पहुँचता हूँ जो परमात्मा की अवतरण भूमि है*। जहाँ भगवान साकार में आ कर अपने ब्राह्मण बच्चों से मिलन मनाते हैं, उनकी पालना करते हैं और परमात्म प्यार से उन्हें भरपूर करते हैं। *इस पावन धरनी पर आकर अब मैं देख रहा हूँ करोड़ो ब्राह्मण आत्मायें यहां उपस्थित है और सभी एक दूसरे के प्रति आत्मा भाई - भाई की रूहानी दृष्टि, वृति रख, अपने रूहानी शिव पिता के प्रेम की लग्न में मग्न हैं*।

➳ _ ➳ सभी ब्राह्मण बच्चों के स्नेह की डोर बाबा को अपनी ओर खींच रही है और बच्चो के स्नेह में बंधे भगवान को भी अपना धाम छोड़ कर नीचे आना पड़ता है। मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं देख रही हूँ, बाबा परमधाम से नीचे आ रहें है। *सूक्ष्म वतन से होते हुए अपने आकारी रथ पर विराजमान हो कर बापदादा अब मधुबन की उस पावन धरनी पर हम बच्चों के सामने आ कर उपस्थित होते हैं*। सभी ब्राह्मण बच्चे अब अपने पिता परमात्मा से मिलन मनाने का आनन्द ले रहे हैं। बापदादा अपने एक - एक अमूल्य रत्न को नजर से निहाल कर रहें हैं। एक - एक करके सभी ब्राह्मण बच्चे बाबा के पास जा कर बाबा से दृष्टि और वरदान ले रहें हैं।

➳ _ ➳ मैं फरिश्ता भी बापदादा से दृष्टि और वरदान लेने के लिए उनके पास पहुंचता हूँ और उनकी ममतामयी गोद में जा कर बैठ जाता हूँ। अपनी स्नेह भरी दृष्टि से बाबा मुझे निहार रहें हैं। बाबा की दृष्टि से बाबा के सभी गण मझ में समाते जा रहें हैं। *बाबा की शक्तिशाली दृष्टि मझमें एक

अलौकिक रूहानी नशे का संचार कर रही हैं । जिससे मैं फरिश्ता असीम रूहानी आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ*। बाबा के हाथों का मीठा - मीठा स्पर्श मुझे बाबा के अपने प्रति अगाध प्रेम का स्पष्ट अनुभव करवा रहा है ।

➳ _ ➳ मैं बाबा के नयनो में अपने लिए असीम स्नेह देख कर गद गद हो रहा हूँ और साथ ही साथ बाबा के नयनों में अपने हर ब्राह्मण बच्चे के लिए जो आश है कि सभी एक दो को सावधान करते इस रूहानी यात्रा पर सदा आगे बढ़े। *बाबा की इस आश को जान, मन ही मन बाबा को मैं प्रोमिस करता हूँ कि इस रूहानी यात्रा पर एक दो को सावधान करते, मैं निरन्तर आगे बढ़ता ओर बढाता रहूँगा*। बाबा मेरे मन के हर संकल्प को पढ़ते हुए, अपना वरदानी हाथ मेरे मस्तक पर रख मुझे सदा विजयी रहने का वरदान दे रहें हैं।

➳ _ ➳ अपने सभी ब्राह्मण बच्चो को नजर से निहाल करके, वरदानो से भरपूर करके, अपने मीठे मधुर महावाक्यों द्वारा अपने सभी बच्चों को मीठी समझानी देकर अब बाबा सभी बच्चों को याद की रूहानी यात्रा पर चलने की ड्रिल करवा रहें है। *मैं देख रही हूँ सभी ब्राह्मण आत्मायें सेकेंड में अपनी साकारी देह को छोड़ निराकारी आत्मायें बन रूहानी दौड़ में आगे जाने की रेस कर रही हैं। सभी का लक्ष्य इस रूहानी दौड़ में आगे बढ़ने का है और सभी अपने पुरुषार्थ के अनुसार नम्बरवार इस लक्ष्य को प्राप्त कर अपनी मंजिल पर पहुंच रही हैं*।

➳ _ ➳ सभी आत्मायें इस रूहानी यात्रा को पूरा कर अब परमधाम में अपने प्यारे बाबा के सम्मुख बैठ उनसे मिलन मना रही हैं। परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर रही हैं। *शक्ति सम्पन्न बन कर अब सभी आत्मायें वापिस अपने साकारी ब्राह्मण स्वरूप में लौट रही है और सभी एक दो को सावधान करते, एक दूसरे को सहयोग देते अपनी रूहानी यात्रा पर निरन्तर आगे बढ़ रही हैं*।

|| 8 || श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)

(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं संकल्प में भी मेरेपन की मैल को समाप्त कर बोझ से हल्का रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं फरिश्ता आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा हर परिस्थिति में फुल पास होती हूँ ।*
✺ *मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ ।*
✺ *मैं शिव शक्ति हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप का त्याग ड्रामा में विशेष नूंधा हुआ है। *आदि से ब्रह्मा बाप का त्याग और आप बच्चों का भाग्य नूंधा हुआ है।* सबसे नम्बरवन त्याग का एक्जैम्पुल ब्रह्मा बाप बना। त्याग उसको कहा जाता है - *जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे।* समय अनसार, समस्याओं के अनसार *त्याग श्रेष्ठ

त्याग नहीं है।* शुरू से ही देखो *तन, मन, धन, सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए त्याग किया।* नये- बच्चे संकल्प शक्ति से फास्ट वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। तो सुना ब्रह्मा के त्याग की कहानी।

➳ _ ➳ ब्रह्मा का फल आप बच्चों को मिल रहा है। *तपस्या का प्रभाव इस मधुबन भूमि में समाया हुआ है।* साथ में बच्चे भी हैं, बच्चों की भी तपस्या है लेकिन निमित्त तो ब्रह्मा बाप कहेंगे। जो भी मधुबन तपस्वी भूमि में आते हैं तो ब्राह्मण बच्चे भी अनुभव करते हैं कि *यहाँ का वायुमण्डल, यहाँ के वायब्रेशन सहजयोगी बना देते हैं।* योग लगाने की मेहनत नहीं, सहज लग जाता है और कैसी भी आत्मायें आती हैं, वह कुछ न कुछ अनुभव करके ही जाती हैं। ज्ञान को नहीं भी समझते लेकिन *अलौकिक प्यार और शान्ति का अनुभव करके ही जाते हैं। कुछ न कुछ परिवर्तन करने का संकल्प करके ही जाते हैं।* यह है ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव।

✺ *ड्रिल :- "मधुबन तपोभूमि की स्मृति से अलौकिक प्यार और शांति का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा मधुबन की मधुर स्मृतियों को स्मृति में रख पहुँच जाती हूँ शान्ति स्तम्भ... *जहाँ प्यारे बापदादा बाहें पसारे खड़े मुस्कुरा रहे हैं... मैं आत्मा बाबा की बाँहों में सिमट जाती हूँ... और बाबा को कहती हूँ बाबा- अब घर ले चलो... इस आवाज़ की दुनिया से पार ले चलो... बापदादा बोले:- बच्चे- मैं अपने साथ ले जाने के लिए ही आया हूँ... साथ जाने के लिए एवररेडी बनो... ब्रह्मा बाप समान त्यागी बनो...* बिंदु रूप में स्थित हो जाओ...

➳ _ ➳ *धन्य है आबू की धरती, जिस पर जहाँ- तहाँ फरिश्ते विचरण कर रहे हैं...* जिधर भी नजर जा रही है फरिश्ते ही घूमते नजर आ रहे हैं... जैसे की फरिश्तों की दुनिया को छोड़ कर सारे फरिश्ते इस धरा पर उतर आये हों... कैसा अद्भुत नजारा है यह जिसे निरन्तर देखते रहने का मन हो रहा है... *यहाँ-वहाँ फरिश्ते सर्व आत्माओं पर अपनी निःस्वार्थ स्नेह, निश्चल प्रेम वा सौहार्द भरी दिव्य रूहानी दृष्टि डालकर मनुष्य आत्माओं को परम सुख-शांति वा खशी की अनभति करा रहे हैं...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा ब्रह्मा बाबा के त्याग की कहानी शिव बाबा से सुन... अन्दर ही अन्दर दृढ़ संकल्प करती हूँ... *मुझ आत्मा को भी बाप समान बनना ही है...* जिस प्रकार ब्रह्मा बाबा ने पहली मुलाकात में ही अपना सारा व्यापार, सारे रिश्ते-नाते, समेट लिए... *उसी प्रकार मुझ आत्मा को भी अपना सब कुछ समेट लेने की शक्ति बापदादा से मिल रही है...* बापदादा की दृष्टि से निकलती हुई शक्ति की किरणें मुझ आत्मा में समा रही है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा देख रही हूँ... ब्रह्मा बाबा के साथ-साथ ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव मधुबन भूमि में समाया हुआ है... *यहाँ का वायुमंडल यहाँ के वाइब्रेशन मुझे सहज योगी बना देते है...* मैं आत्मा देख रही हूँ... कोई भी ब्राह्मण आत्मा जो मधुबन तपस्वी भूमि में आती है... तो अनुभव करती हैं कि... *यहाँ योग लगाने की मेहनत नहीं करनी पड़ती, सहज ही लग जाता है...* मैं आत्मा देख रही हूँ... कैसी भी आत्माएं आती हैं... वह कुछ ना कुछ अनुभव करके ही जाती हैं... ज्ञान को नहीं समझते लेकिन *अलौकिक प्यार और शांति का अनुभव करके ही जाते हैं...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सदा बाप समान विश्व हूँ...* बाबा जैसी दृष्टि, बाबा जैसी वृत्ति, बाबा जैसी स्मृति, सदा बाप समान साक्षी दृष्टा स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करती हूँ... *मैं मास्टर ब्रह्मा हूँ... मेरी चलन, दृष्टि, वृत्ति बाबा जैसी हो रही है... बाबा मेरी मस्तक मणि है...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔